ह्वेनसांग के विवरण से होता है। ~~यूनानी लेखकों से~~

अशोक का साम्राज्य विस्तार → दूसरा दिन

~~अशोक का साम्राज्य विस्तार दूसरा दिन~~

अभिलेखों के आधार पर अशोक की साम्राज्य की जो सीमा निश्चित की जाती है, उसकी पुष्टि उन जातियों की स्थिति से भी होती है जिन्हें अशोक ने अपने राज्य की सीमा पर माना है। ये जातियाँ हैं — योन, गान्धार, कम्बोज, नाभक, नाभपंक्ति, राष्ट्रिक, भोज, आन्ध्र और परिन्द। योन से तात्पर्य सम्भवतः उन यूनानियों से है जो निसा में रहते थे। गान्धार की राजधानी तक्षशिला थी। राष्ट्रिक नासिक और पूना जिले में था। भोज सम्भवतः बम्बई के पास थाना एवं कोलाबा जिलों में रहते थे। नाभक और नाभपंक्ति बलूचिस्तान और परिन्द सम्भवतः उत्तरी बंगाल में रहते थे।

अपने राज्य की सीमा के बाहर अशोक ने भारत के अन्दर चोल, पाण्ड्य, केरलपुत्र, सतियपुत्र और ताम्रपर्णि का उल्लेख किया है। भारत के बाहर उसने उन पाँच यूनानी शासकों को माना है जो सीरिया, मिस्र, मकदूनिया, सिरोन तथा एपिरस में राज्य करते थे। राज्य के अन्दर अशोक ने बोधगया, धौली, उज्जयिनी, सुवर्णगिरि, कौशाम्बी, पाटलिपुत्र आदि नगरों का उल्लेख किया है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि अशोक के विशाल साम्राज्य में काबुल, अफगानिस्तान और हिन्दूकुश तक का समस्त भू-भाग सम्मिलित था। इसके अतिरिक्त बलूचिस्तान, मकरान, सिन्ध, स्वात घाटी कश्मीर और नेपाल सहित पूरब से पश्चिम समुद्र तथा और नीचे तमिल प्रदेशों तक का क्षेत्र उसके विजित राज्य थे। केवल दक्षिण के चोल, पाण्ड्य सतियपुत्र, केरलपुत्र एवं ताम्रपर्णि के राज्य उसके प्रत्यन्त स्वतंत्र राज्य थे। रैफसन यवन, कम्बोज गान्धार, रठिक, राष्ट्रिक, भोज पुलिन्द, आन्ध्र आदि को अशोक के साम्राज्य के बाहर के राज्य मानते हैं किन्तु वे साम्राज्य के अन्तर्गत के राज्य थे और इसलिए उनके राज्य में सर्वहित के कार्यों के लिए अशोक ने धर्म-महापात्रों की नियुक्ति की थी। मौर्य साम्राज्य के इस विस्तार और प्रभाव के कारण ही महावंश में अशोक को समस्त जम्बूद्वीप का एकछत्र सम्राट कहा गया है। रूपनाथ अभिलेख से ज्ञात होता है कि " समस्त जम्बूद्वीप सम्राट अशोक का कार्यक्षेत्र था और उनके पराक्रम के फल से समस्त जम्बूद्वीप के देवता जो पहले मनुष्यों से अलग थे, वे मनुष्यों से मिल गये।"